उपसंहार

उपसंहार

साहित्यिक विधाओं में सबसे अधिक प्रचलित और लोकप्रिय विधा उपन्यास है। यह आम जनताओं के बीच प्रचलित विधा है। पात्र संयोजन की नवीनता, अच्छा कथा सूत्र, विभिन्न शैलियों का प्रयोग आदि सभी से उपन्यास पूर्ण हो जाता है। यह बहुत मनोरंजक साहित्यांग है। उपन्यास में कथा के साथ-साथ उसकी भाषा में काव्यात्मकता का प्रयोग करके पाठकों को अपने में तल्लीन करता है। आधुनिक युग में उपन्यास का महत्वपूर्ण स्थान है।

आज के पुरुषाधीन समाज में नारी की स्थिति दोयम दर्जे की होती जा रही है। नारी अपने घर में, और बाहर नौकरी करती है हर कहीं वह शोषण का शिकार बन रही है। इसी कारण स्त्रीविमर्श की आँधी चलने लगी है। इसका झलक आज कल के साहित्य में भी दिखाई देता है। आधुनिक युग में साहित्यकार इस शोषित, पीडित और तिरस्कृत स्त्री को केन्द्र बनाकर रचनायें करते हैं। उसके संघर्ष का चित्रण अपनी रचनाओं में करते हैं। स्त्री की हरेक समस्या पर विचार-विश्लेषण करना ही स्त्री विमर्श है। स्त्री समस्याओं और उनके शोषण का बहुत मर्मस्पर्शी चित्रण आजकल के उपन्यासों में दिखायी देता है। आज स्त्री विमर्श समस्त साहित्य का अभिन्न अंग बन गया है।

सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से जिसका शोषण हो रहा है उसे शोषित वर्ग कहते हैं। शोषितवर्ग के अंतर्गत निम्न वर्ग, मध्य-निम्नवर्ग, स्त्री, आदिवासी लोग, किसान, मज़दूर आदि आते हैं। शोषित वर्ग का चित्रण आधुनिक युग के साहित्यिक रचनाओं में हो रहा है। शोषित वर्ग के ऊपर होनेवाले अत्याचारों का चित्रण साहित्यकार अपनी रचनाओं द्वारा करते हैं। उनकी दयनीय स्थिति का चित्रण समाज के सामने करते हैं।

श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज़ के उपन्यासों में स्त्री विमर्श और शोषित वर्ग के जीवन की समस्याओं का झलक दिखाई देता है। सामाजिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण उनकी सभी रचनाओं में देखने को मिलता हैं। उनकी अधिकांश रचनाओं में शोषित वर्ग के जीवन तथा आदिवासी लोगों की गरीबी एवं शोषण का चित्रण विशेष रूप से प्रस्तुत किया गया है। महिलाओं की दयनीय स्थिति एवं शोषण के विरुद्ध विद्रोह की स्पष्ट झलक इनकी रचनाओं में दिखाई देता है।

लेखिका ने समाज में नारी के प्रति बढ़ते शोषण के प्रति पाठकों का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की है। अपनी रचनाओं द्वारा शोषित वर्ग की समस्याएँ तथा उनके प्रति समाज में होनेवाले प्रतिक्रिया का चित्रण भी उन्होंने अपनी रचनाओं में किया है। मेहरुन्निसा परवेज़ के उपन्यासों में महिलाओं की दयनीय स्थिति का चित्रण किया गया है। नारी के प्रति समाज का नज़रिया और इसके कारण नारी को जिन समस्याओं को झेलना पड़ता है इसका चित्रण भी उनकी रचनाओं में मिलता है।

जहाँ कहीं भी नारी के प्रति अन्याय हुआ है, उसके प्रति अपना आक्रोश व्यक्त करने में और नारी को जागरूक बनाने की कोशिश लेखिका ने किया है। निम्न स्तर की महिलाओं के जीवन की समस्याओं को मेहरुन्निसा परवेज़ ने अपनी रचनाओं में चित्रित किया है। इसके माध्यम से उपन्यासकार ने सामाजिक समस्याओं से जूझती हुई नारी को मंजिल की प्राप्ति के लिए आगे बढ़ने का प्रोत्साहन दिया है।

पारिवारिक जीवन में नारी को महत्वपूर्ण भूमिका दिया गया है। पारिवारिक जीवन में नारी अपने विभिन्न रूपों में अपना दायित्व निभाती है। आज के समाज में नारी अपने पति की तरह घर से बाहर जाकर काम करके घर की आर्थिक परिस्थितियों को सुलझाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके लिए नारी को काफी मुसीबतों को सहना पडता है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के विषय को पाँच अध्यायों में विभक्त कर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

पहले अध्याय का शीर्षक है 'साठोत्तरी उपन्यास - उपन्यास के तत्व'। इसमें साठोत्तर काल की साहित्यिक प्रवृत्तियों का संक्षिप्त विवरण दिया है। साठोत्तर काल में समाज में कई प्रकार की घटनाएँ घटित हुई, कई प्रकार के परिवर्तन समाज में आये। इन सबकी झलक उस समय के साहित्य में भी दिखाई पड़ता है। साठोत्तरी उपन्यास में परिवर्तित विचारधारा का प्रभाव दिखाई देता है। इस अध्याय में साठोत्तरकाल के कुछ प्रमुख उपन्यासकारों का परिचय भी दिया गया है। उपन्यास के तत्वों के अंतर्गत उपन्यास के विधायक तत्वों का विवेचन किया है। उपन्यास के प्रमुख छह तत्व है - कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, देश-काल, शैली और उद्देश्य। इन छह तत्वों का विवेचन इस अध्याय में किया गया है।

दूसरे अध्याय का शीर्षक है, 'मेहरुन्निसा परवेज़ - व्यक्तित्व एवं कृतित्व' इस अध्याय को दो खण्डों में विभक्त किया है। पहले खण्ड है व्यक्तित्व और दूसरा है कृतित्व। पहले खण्ड के तीन उपखंड है वे है जीवन परिचय - इसके अंतर्गत मेहरुन्निसाजी के व्यक्तिगत जीवन के बारे में बताया गया है। उसका जन्म, माँ-बाप, शादी, पढ़ाई, आदि के बारे में बताया है। मेहरुन्निसाजी लेखन कार्य के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी रुचि रखती हैं। दूसरा उपखंड है पुरस्कार और सम्मान। इसके अंतर्गत मेहरुन्निसाजी को मिले पुरस्कार और सम्मान का लघु विवरण दिया गया है। और तीसरा उपखंड है साहित्यिक योगदान। इसमें मेहरुन्निसाजी के आरंभिक साहित्यिक लेखन के बारे में बताया गया है। उनकी रचनाओं की विशेषताओं और विषय के बारे में भी बताया गया है। दूसरा खंड है 'कृतित्व'। इसके अंतर्गत उनके तीन उपन्यास 'अकेला पलाश', 'कोरजा' और 'समरांगण' का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

तीसरे अध्याय का शीर्षक है 'मेहरुन्निसा परवेज़ के उपन्यासों में स्त्री'। इस अध्याय को तीन उपखंडों में विभक्त किया गया है। पहले उपखंड में नारी जीवन के विभिन्न पहलू का चित्रण उपन्यासों के आधार पर किया गया है। नारी के विभिन्न रूप का चित्रण किया गया है माँ का रूप, बेटी का रूप, बहन का रूप, पत्नी का रूप, सास और बहु का रूप तथा प्रेयसी का रूप। दूसरे उपखंड में नारी जीवन की समस्याओं का चित्रण उपन्यासों के आधार पर किया गया है। नारी को अपने जीवन में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पडता है। इसका चित्रण यहाँ किया गया है जैसे वैवाहिक समस्या, दहेज समस्या, तलाक की समस्या, बाल विवाह, विधवा समस्या, नौकरी पेश नारी की समस्याएँ, अनमेल विवाह, अंतर्जातीय विवाह आदि। तीसरा उपखंड है 'नारी के बदलते रूप'। इसके अंतर्गत आधुनिक युग के परिवर्तित नारी का चित्रण उपन्यासों के आधार पर किया गया है।

चौथे अध्याय का शीर्षक है 'मेहरुन्निसा परवेज़ के उपन्यासों में शोषित वर्ग'। इसे पाँच उपखंडों में विभक्त किया है। सामाजिक पक्ष, आर्थिक पक्ष, धार्मिक पक्ष, सांस्कृतिक पक्ष और राजनैतिक पक्ष। इस अध्याय में शोषित वर्ग के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनैतिक समस्याओं का चित्रण किया गया है। इसके अलावा उनके रहन-सहन, रीति-रिवाज़, आचरण, धार्मिकता आदि का चित्रण भी किया गया है।

पाँचवें अध्याय का शीर्षक है 'मेहरुन्निसा परवेज़ के उपन्यासों की भाषा-शैली'। इसके अंतर्गत उपन्यासों में प्रयुक्त भाषा एवं शैली का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। मेहरुन्निसाजी की भाषा शैली में विविधता है। उनकी भाषा अत्यंत प्रभावशाली एवं गंभीर है। उनकी भाषा में काव्यात्मकता है। शिल्प का खिंचाव और बिंबों का वैभव आदि है। वह अपनी भाषा में कहावतें, सूक्तियाँ आदि का प्रयोग करती हैं। उनकी भाषा काव्यात्मकता और भाषात्मकता से परिपूर्ण है। वह अपने उपन्यासों में पात्रानुकूल भाषा

का प्रयोग करती है। ध्वन्यात्मकता और चित्रात्मकता उनकी भाषा की पहचान है। मेहरुन्निसाजी के कथा वर्णन में विभिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग करती है जैसे आत्मकथात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, फ्लैश-बैक शैली, आलंकारिक शैली आदि। इसी तरह विविध बिंबों का प्रयोग भी वे अपने उपन्यासों में करती है। यह सब उनकी रचनाओं की विशिष्टता का ध्योतक है।

निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि इस शोध प्रबंध की तैयारी के लिए लिये गये उपन्यासों में उपन्यासकार श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज़ ने नारी समस्याओं तथा शोषित वर्ग का चित्रण सुचारू रूप से प्रस्तुत किया है, इसके अतिरिक्त साठोत्तरी उपन्यास और उपन्यास के विधायक तत्वों के बारे में भी इस शोध प्रबंध में परामर्श किया गया है। 'अकेला पलाश', 'कोरजा', 'समरांगण' इन उपन्यासों में चित्रित स्त्री विमर्श की ओर भी ध्यान आकर्षित करने का प्रयास इस शोध प्रबंध में किया है। इन उपन्यासों के नारी पात्रों के द्वारा लेखिका ने यह बताने का प्रयास किया है कि नारी समाज में किस तरह की समस्याएँ झेल रही है, शोषण का शिकार बन रही है। लेखिका ने शोषित वर्ग की समस्याओं का चित्रण अपने उपन्यासों द्वारा किस प्रकार किया है। यह भी इस शोध प्रबंध में बताया गया है। इसके अतिरिक्त इन उपन्यासों में चित्रित भाषा पक्ष का भी विवेचन इसमें किया गया है। अतः समकालीन उपन्यासकारों में मेहरुन्निसाज परवेज़ का स्थान गणनीय है।